Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीत के मूल्यात्मक पक्षों का अन्तः सम्बन्धी परिशीलन

SHWETA MATHUR

Music Department, Dayalbagh Educational Institute, Dayalbagh , Agra

सारांश

संगीत के अन्त: सम्बन्धी पक्षों का गहनता से अध्ययन करने के लिए कतिपय तत्व आवश्यक रुप से सक्षम आते हैं जैसे – दार्शनिक , मूल्यात्मक , प्रयोगात्मक एवं व्यवहारात्मक आदि। प्रस्तुत शोध पत्र में संगीत के मूल्यात्मक पक्षों का अध्ययन कर उन्हें स्पष्ट किया जा रहा है , जिनमें सांस्कृतिक , आध्यात्मिक व सौन्दर्यात्मक पक्षों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

शब्द कुंजी – संगीत , मूल्यात्मक पक्ष , अन्त: सम्बन्धी , परिशीलन

सामगीतिरतो ब्रह्मा वीणा सक्ता सरस्वती।
किमन्ये यक्षगन्धर्वदेवदानवमानवाः ॥

'संगीत रत्नाकर'

अर्थात् ब्रह्मा साम – गान में रत हैं और सरस्वती वीणा में आसक्त हैं, यक्ष, गन्धर्व, देव, दानव, तथा मनुष्य आदि अन्यों की तो बात ही क्या है? संगीत लौकिक व अलौकिक सुख को प्राप्त करने की एक कला है। मानव जीवन में संगीत का स्थान अद्वितीय रहा है। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह किसी न किसी तरह से संगीत से जुड़ा रहता हैं। यदि संगीत पर गहन विचार किया जाए तो सर्वप्रथम इस के अर्थ एवं व्युत्पत्ति पर प्रकाश डालना आवश्यक होगा। अतः संगीत को स्पष्ट करने वाले निम्न अर्थ व इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार हैं –

संगीत' का अर्थ एवं व्युत्पत्ति

संगीत शब्द की उत्पत्ति 'गीत' शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से होती है। 'सम' का अर्थ है – सुचारू रूप से या सही ढंग से तथा 'गीत' का अर्थ है – गायन या गाना। अर्थात् सुचारू रूप से गाया जाना 'संगीत' कहलाता है। पं0 शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' में कहा गया है, यथा –:"गीतम् वाद्यं च नृत्यम् त्रयं संगीतमुच्यते।" अर्थात् गायन , वादन और नृत्य के समूह को संगीत कहते हैं। इन तीनों कलाओं का समावेश भारतीय संगीत की परम्परा का अद्वितीय उदाहरण है। अर्थ एवं व्युत्पत्ति के पश्चात् विभिन्न परिभाषाएँ संगीत को और अधिक स्पष्ट करती हैं, यथा

(1) 'नाट्यशास्त्र' के अनुसार –

त्रेतायुगे संप्रवृते मनोवैवस्तस्य।
महेन्द्रप्रमुखैर्देवैरूक्तः किल पितामहः ॥
क्रीड़ानीयकमिच्छामो दृश्यं श्रव्यं च यद् भवेत ॥

अर्थात् महेश्वर आदि सभी देवताओं ने भगवान ब्रह्मा से प्रार्थना की कि हम लोग ऐसा खेल चाहते हैं जो दृश्य और श्रव्य हो। ब्रह्मा ने सब वेदों का अनुस्मरण करके ऋगवेद से पाठ्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रसों को लेकर 'नाट्यवेद' नामक पंचम वेद की रचना की।

(2) 'संगीत दर्पण 'के अनुसार –

गीतवादित्रनृत्यानां रक्तिः साधारणो गुणः।
अतो रक्तविहीनं यत्न् तत संगीतमुच्यते ॥

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अर्थात् गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों का साधारण गुण 'शक्ति' अर्थात् मनोरंजन करने की प्रकृति है। अतः जिस संगीत में यह रक्तिगुण नहीं है, उसे संगीत नहीं कहा जा सकता।

(3) 'संगीतसार' के अनुसार –

"संगीत गायन वादन एवं नृत्य के माध्यम से वंदित भाव उत्पन्न करने वाली रचना है। वास्तव में संगीत कला स्वर, ताल और लय के सन्तुलित मिश्रण की मधुर सुरीली रचना है। जो प्राणिमात्र के चित्र को एकदम आनंदित कर देती है।

(4) पं0 भातखण्डे जी, के अनुसार –

"गीत वाद्य तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश 'संगीत' शब्द में होता है। वस्तुतः ये तीनों कलाएँ स्वतन्त्र हैं, किन्तु गीत प्रधान होने के कारण तीनों का समावेश 'संगीत' में किया जाता है।"

इस प्रकार उपरोक्त अर्थ एवं परिभाषाओं द्वारा 'संगीत' स्पष्ट होता है यथा गायन, वादन, नृत्य के समन्वय से की गई एक ऐसी रचना जो मनुष्य को कर्णप्रिय लगे व उनके मन को आनंदित करे, वह 'संगीत' कहलाती है। इसीलिए संगीत को ललित कलाओं में से सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त होता है।

अब यदि संगीत के मूल्यात्मक पक्ष पर विचार किया जाये तो शास्त्रीय संगीत का मूल्यांकन उनके स्वर एवं ताल पर आधारित होता है। स्वरों का समुचित स्वरूप, लय – ताल का चलन एवं उनके निर्माण की विधि ये सभी उनके सैद्धांतिक नियमों के अन्तर्गत आता है। संगीत में इसका सम्बन्ध बताने से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि मूल्य क्या है तथा इसके प्रकार व महत्व को जानना भी आवश्यक है।

मूल्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ

मूल्य शब्द अपने आप में मूल्यवान है क्योंकि मूल्य श्रेष्ठ विचार के रूप में होते हैं और व्यवहार के रुप में प्रकट होते हैं। सामान्यतया मूल्य शब्द अंग्रेजी के मूल्य value शब्द का हिन्दी रुपान्तरण है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के velere वैलेर शब्द से मानी जाती है। इसका अर्थ किसी वस्तु की कीमत अथवा उपयोगिता से लगाया जाता है। भारतीय धर्म ग्रन्थों में मूल्यों के लिए 'शील' शब्द का उपयोग किया गया है। इसे मूल्य शब्द का पर्यायवाची तो नहीं कहा जा सकता है लेकिन उसका समीपक कहा जा सकता है। शील शब्द का उपयोग चरित्र के लिए किया गया है। इस प्रकार मूल्य का सम्बन्ध हमारे आचार- व्यवहार से लगाया जा सकता है। आचार व्यवहार में अधिकाधिक अच्छाइयाँ ही मूल्य को प्रदर्शित करती हैं। वस्तुतः मूल्य एक मानक है। यही मानक व्यक्ति को अच्छे कर्म के लिए प्रेरित करता है।

सी. वी. गुड के अनुसार, "मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोधक की दृष्टि से महत्वः पूर्ण मानी जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।"

आलपोर्ट के अनुसार, "मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।"

जैक आर. फ्रैंकल के अनुसार, "मूल्य आचार – सौन्दर्य कुशलता या महत्व के मापदंड हैं, जिनका लोग समर्थन करते हैं जिनके साथ वे जीते हैं, जिन्हें वे कायम रखते हैं।"

जे.पी. शेवर तथा विलियम स्ट्राँग के अनुसार, "मूल्य महत्व के बारे में निर्णय के मानदण्ड व नियम हैं। ये वे मापदण्ड हैं जिनसे हम चीजों (लोगों, वस्तुओं, विचारों, क्रियाओं तथा परिस्थितियों) के अच्छा, महत्वपूर्ण व वांदनीय होने अथवा खराब, महत्वहीन व तिरस्करणीय के बारे में निर्णय लेते हैं।"

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उपर्युक्त अर्थ एवं परिभाषाओं के पश्चात् मूल्यों का वर्गीकरण अथवा प्रकार इस प्रकार हैं –

- **आध्यात्मिक मूल्य** – इन मूल्यों के अन्तर्गत श्रद्धा, दया. आस्तिकता, सब्दयता, विनम्रता, शांति आदि आते हैं।
- **सामाजिक मूल्य** – इसके अन्तर्गत साहस, आनन्द, सेवा, सत्य, सब धर्मों के प्रति सम्मान, श्रम की प्रतिष्ठा, पवित्रता इत्यादि आते हैं।
- **नैतिक मूल्य** – इनमें कर्तव्य परायणता, सत्यभाषी, बड़ों का सम्मान, शील का पालन , पवित्र साधनों का धनोपार्जन आदि चारित्रिक मूल्य आते हैं।
- **व्यक्तिगत मूल्य** – इस मूल्य के अन्तर्गत महत्वकांक्षा, स्वच्छता, अनुशासन आदि उनके स्वामित्व और उपयोग दोनों के सन्दर्भ में आते हैं।
- **पारिवारिक मूल्य** – ये मूल्य परिवार के नेतृत्व से आते हैं जो परिवार प्रणाली के भीतर पोषित व विकसित होते हैं तथा सार्वभौमिक रुप से भविष्य की पीढ़ी को इन मूल्यों को प्रदान करते हैं।
- **सौन्दर्यात्मक मूल्य** – इन मूल्यों में जो चीजें और गतिविधियाँ सौन्दर्य का आनन्द देती हैं वे सौन्दर्यवादी मूल्य हैं। उदाहरण – स्वाद, ललित कलाएँ आदि ।
- **सांस्कृतिक मूल्य** – ये मूल्य संस्कृति प्रधान होते हैं जिनमें त्यौहार, पर्व, रीति – रिवाज, लोक कलाएँ, रहन-सहन प्रमुख हैं। इन मूल्यों के अन्तर्गत संगीत त्यौहार, पर्व, रीति-रिवाजों एवं लोक कलाओं में स्पष्ट रुप से सम्बन्धित है।
- **शारीरिक मूल्य** – इसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वास्थ्य. शक्ति, लचीलापन, सौन्दर्य एवं चुस्ती जैसे गुणों अथवा मूल्यों को प्राप्त करता है। जैसे – अनुशासन, सहनशीलता, धैर्य, स्फूर्ति, निर्णय क्षमता, शारीरिक शक्ति इत्यादि ।

इस प्रकार इन सभी तथ्यों से हमें मूल्य तथा उसके अर्थ व प्रकारों से सम्बन्धित जानकारी से स्पष्ट हुआ कि मूल्य क्या है तथा इसका क्या महत्व है। संगीत एवं मूल्य के अर्थ को समझने के पश्चात् यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि संगीत में मूल्य का क्या महत्व है तथा किस प्रकार ये दोनों एक – दूसरे से सम्बन्धित हैं तो इनका सामंजस्यात्मक स्वरुप इस प्रकार है –

- आध्यात्मिक मूल्य एवं संगीत
- सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं संगीत
- सांस्कृतिक मूल्य एवं संगीत

आध्यात्मिक मूल्य एवं संगीत

आध्यात्म अर्थात् ईश्वर या परमसत्ता को प्राप्त करने का प्रयास जिसे संगीत के माध्यम से प्राप्त किया जाता है तथा जिसे प्राप्त करने का साधन ओउम् माना जाता है । पूजन करते समय वैदिक मंत्रों व पदों की स्तुति करना, भजन-कीर्तन के माध्यम से ईश्वर का गुणगान करना, स्वरों द्वारा ओउम् का उच्चारण करना, कविताओं व आरती-गीत आदि के गायन से जो आंतरिक मन में श्रद्धा और दया का भाव उत्पन्न होता है तथा सुख व शान्ति प्राप्त होती है, यही सब आध्यात्मिकता में संगीत के महत्व को दर्शाता है। शास्त्रीय संगीत में उपलब्ध ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि गायन शैलियों में भी ईश्वरीय पदों व लीलाओं का वर्णन मिलता है जो विभिन्न रागों की बंदिशों में स्वरों से सजाकर होरी, दादरा, भक्ति-गीतों के माध्यम से गाया-बजाया जाता है । संक्षेप में कहें तो भक्ति अथवा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

आध्यात्मिकता को संगीत की आत्मा कहा जा सकता है क्योंकि भक्ति ही एक ऐसा माध्यम है जो अपने इष्ट के प्रति अद्भुत श्रद्धा की भावनाओं को स्वरों में बाँधता है तथा आध्यात्मिकता को श्रेष्ठतम बनाता है। अतः आध्यात्मिक मूल्य व संगीत एक- दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं।

सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं संगीत

सुकरात के अनुसार, "जो अच्छा है, वही सुन्दर है।" जिसके कारण भाव, रस, आनन्द व सन्तुष्टि प्राप्त हो, वही सौन्दर्य तत्व कहा जाता है। भारतीय संगीत के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में ललित कलाओं का समावेश होता है जिसके अन्तर्गत पाँच कलाएँ आती है, यथा- काव्यकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत कला । इन सभी कलाओं में संगीत कला का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य के भावों को जाग्रत करने में संगीत कला जितनी सूक्ष्म अन्य कोई कला नहीं है। मानव की आन्तरिक भावनाओं, यथा- प्रेम,घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, वात्सल्य आदि का व्यवहार रस के अन्तर्गत होता है। इन्हीं भावों तथा रसों की प्रधानता संगीत में विद्यमान रहती है। सांगीतिक तत्वों में गायन प्रधान आकर्षक बंदिशों को बनाने के लिए वादी-सम्वादी, न्यास, चलन, उठान आदि के स्वरों का ध्यान रखना, इसी तरह राग गायन करते समय आलाप-तानों द्वारा राग का रस, भाव, प्रकृति व स्वर वैचित्र्य होना अत्यंत आकर्षित व मनमोहक लगता है। इसी प्रकार लयकारी , खटका-मुर्की, गमक आर्विभाव-तिरोभाव, अलंकार प्रदर्शन, नृत्याधारित भावाभिनय इत्यादि सौन्दर्यात्मक तत्व हैं जिसके माध्यम से श्रोतागण अत्यन्त आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते हैं। वस्तुतः सौन्दर्यात्मक मूल्य व संगीत एक – दूसरे से सम्बन्धित हैं।

सांस्कृतिक मूल्य एवं संगीत

ऋग्वेद के अनुसार, "सा सांस्कृतिकः प्रथा विश्ववारा" अर्थात् आदि संस्कृति विश्व के लिए थी। किसी भी देश की सभ्यता का परिचय उस देश के गीत, लोक साहित्य, पर्व-त्यौहारों, रीति-रिवाजों एवं उनके रहन-सहन से किया जाता है। भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यन्त प्रतिष्ठित रहा है। भारत के अन्तर्गत आने वाले भिन्न-भिन्न शहरों या लोकों में भिन्न – भिन्न प्रकार की लोक कलाओं का प्रचलन है जो गायन, वादन व नृत्य तीनों रुप में प्रमुख माना जाता है। इन्हीं कलाओं द्वारा हमारी संस्कृति आज तक सुरक्षित व समृद्ध है। संगीत के द्वारा ही अनेक तीज- त्यौहारों, विवाह-संस्कारों, प्राचीन प्रथाओं व परम्पराओं एवं रीति- रिवाजों आदि का बोध होता है। इन सभी सांस्कृतिक गतिविधियों में लोक संगीत का विशेष महत्व रहा है। विवाह आदि उत्सव पर बरना-बरनी गीत, तीज-त्यौहारों पर कजरी, सावन गीत, बारहमासा, आदि गाये जाते हैं, इसी तरह लोक नृत्यों में भी रासलीला, गरबा, घूमर-झूमर, गिद्धा-भाँगड़ा, होली आदि की प्रधानता है। इस प्रकार सांस्कृतिक मूल्यों में संगीत का अन्तर्सम्बन्ध इन सभी रीति – रिवाजों व परम्पराओं के माध्यम से प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

मूल्यों का महत्व जितना अन्य क्षेत्रों में है उतना ही संगीत के अन्तर्गत भी है। स्वरों का उचित स्थान एवं चलन, रस-भाव, लय-ताल आदि का स्वरुप आध्यात्मिक; सौन्दर्यात्मक व सांस्कृतिक के माध्यम से उसके मूल्यों को दर्शाता है तथा उनेक अन्तसम्बन्धी तत्वों को उजागर करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

संगीत रत्नावली, अशोक कुमार 'यमन', 2015,अभिषेक पब्लिकेशन
मूल्यों का वर्गीकरण प्रकार, महत्व, कैलाश, https:\\www.kailasheducation.com
वर्तमान मूल्यों के प्रकार, https:\\www.sarkariguider.in